जाग रे बन्धु

जाग-जाग रे, जाग रे बन्धु, नया सवेरा लाना है । 1
भारत का स्वाभिमान जगाकर, जीवन सफल बनाना है।। 2
रामदेव ने अलख जगाई, भ्रष्टाचार मिटाना है ।। 2
अन्ना ने ललकार लगाई, भ्रष्टाचार मिटाना है।। 2
तरुणाई ने ली अँगड़ाई, भ्रष्टाचार मिटाना है।। 2
भारत का जन-गण-मन जागे, भ्रष्टाचार मिटाना है।। 2

प्राणों का उत्सर्ग भले हो, कदम न पीछे खींचेंगे।
रामदेव के सुर में सुर दे, नभ गर्जन से भर देंगे ।।
भारत की बेबस जनता का, सारा कष्ट मिटाना है ।
जाग - जाग रे ———————————— ।।
2-1-2-1———————————— ।।

देश भले स्वाधीन, आज भी, कानून पुराना चलता है ।
भारत का धन परदेसों में, काला होकर सड़ता है।।
इस काले को उजला करके, भारत स्वर्ग बनाना है।
जाग - जाग रे ———————————— ।।
2-1-2-1———————————— ।।

गो-हत्या और बलात्कार के, कलंक न अब रह पायेंगे।
आतंकवाद और भ्रष्टाचार को, जड़ से सभी मिटायेंगे ।।
संविधान में संशोधन कर, ऐसा एक्ट बनाना है ।
जाग - जाग रे ———————————— ।।
2-1-2-1———————————— ।।

भारत फिर से विश्व-गुरू हो, कोशिश ऐसी करनी है।
शिक्षा, खेती, स्वास्थ्य, चिकित्सा, सारी देसी करनी है।।
भारत की मेधा को फिर से, सतोगुणी बनाना है ।
जाग - जाग रे ———————————— ।।
2-1-2-1———————————— ।।

लोकपाल पर बनी समिति, केवल एक शुरुआत है।
लक्ष्य हमारा बहुत दूर है, जन-गण-मन की आस है।।
कमर कसो, संकल्प करो, जो लक्ष्य तुम्हें ये पाना है।
जाग - जाग रे ———————————— ।।
2-1-2-1———————————— ।।

रचयिता : मनमोहन आर्य (पूर्व प्रवक्ता भौतिक विज्ञान) 1498, नयी शिवपुरी, हापुड़ मो0 9897661057